Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

हिंदुओं में विवाह विच्छेद की उभरती प्रवृत्तियों का राजस्थान के विशेष संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

पुष्पा लौहार* डॉ. मीता चौधरी**

* शोधार्थी (विधि) जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड-टू-बी विश्वविद्यालय) उदयपुर (राज.) भारत
** सहायक आचार्य (विधि) जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड-टू-बी विश्वविद्यालय) उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – यह शोध पत्र हिंदुओं में विवाह विच्छेद (तलाक) की उभरती प्रवृत्तियों का राजस्थान के विशेष संदर्भ में विश्लेषण करता है। परंपरागत रूप से हिंदू समाज में विवाह एक पवित्र बंधन माना जाता था, लेकिन सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक परिवर्तनों के प्रभाव से तलाक की घटनाओं में वृद्धि देखी जा रही है। यह अध्ययन तलाक के कानूनी, सामाजिक और व्यक्तिगत कारकों पर केंद्रित है, जिसमें शहरीकरण, शिक्षा का स्तर, महिलाओं की आत्मनिर्भरता, और पारिवारिक संरचना में बदलाव प्रमुख भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त, तलाक से उत्पन्न सामाजिक चुनौतियों, जैसे कि महिलाओं और बच्चों पर प्रभाव, समाज के दृष्टिकोण और पुनर्विवाह के संदर्भ में चर्चा की गई है। राजस्थान राज्य के आंकड़ों और मामलों का विश्लेषण कर, इस शोध में विवाह विच्छेद से जुड़े रुझानों और उनके कारणों का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। अंत में, तलाक की बढ़ती प्रवृत्तियों से निपटने के लिए सुझाव और समाधान भी दिए गए हैं।

शब्द कुंजी – हिंदू विवाह, तलाक की प्रवृत्तियाँ, सामाजिक परिवर्तन. राजस्थान, पारिवारिक संरचना, कानूनी प्रावधान, स्त्री आत्मनिर्भरता, पुनर्विवाह, शहरीकरण, समाजशास्त्रीय विश्लेषण।

प्रस्तावना – हिंदू समाज में विवाह को केवल एक सामाजिक अनुबंध के रूप में नहीं, बल्कि एक धार्मिक और सांस्कृतिक परंपरा के रूप में देखा जाता रहा है, जो दो व्यक्तियों के साथ-साथ उनके परिवारों को भी आपस में जोड़ता है। विवाह को पवित्र बंधन माना जाता है, जिसका उद्देश्य न केवल पारिवारिक जीवन का आरंभ करना है, बल्कि समाज में नैतिक मूल्यों और स्थिरता को बनाए रखना भी है। परंपरागत रूप से, हिंदू विवाह में विच्छेद या तलाक की धारणा को हतोत्साहित किया जाता था, क्योंकि इसे समाज और धर्म की दृष्टि से अनुचित माना जाता था।

हालांकि, समय के साथ बदलते सामाजिक और आर्थिक परिवेश ने विवाह और पारिवारिक संरचना पर गहरा प्रभाव डाला है। आधुनिक जीवनशैली, शिक्षा का प्रसार, शहरीकरण, और महिलाओं की आत्मनिर्भरता में वृद्धि ने वैवाहिक संबंधों में नए आयाम जोड़े हैं। नतीजतन, तलाक की घटनाओं में वृद्धि देखी जा रही है, जो कि पारंपरिक हिंदू समाज के मूल्यों में परिवर्तन का संकेत देती है।

राजस्थान जैसे राज्य, जहाँ समाज पारंपरिक मूल्यों और रीति-रिवाजों से गहराई से जुड़ा हुआ है, वहाँ भी विवाह विच्छेद की प्रवृत्ति में इजाफा देखने को मिला है। शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में तलाक की बढ़ती दर ने इस विषय पर गहन विश्लेषण की आवश्यकता उत्पन्न की है। विवाह विच्छेद के कानूनी पहलुओं के साथ-साथ इसके सामाजिक, मानसिक, और भावनात्मक प्रभावों पर विचार करना आज के समय में अत्यंत आवश्यक हो गया है।

इस लेख में राजस्थान के संदर्भ में विवाह विच्छेद की उभरती प्रवृत्तियों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य तलाक के कारणों, इसके प्रभावों, और समाज की प्रतिक्रिया को समझना है। साथ ही, यह भी देखा जाएगा कि कैसे पारिवारिक संरचना और सामाजिक दृष्टिकोण समय के साथ परिवर्तित हो रहे हैं। अंत में, इस लेख के माध्यम से विवाह विच्छेद से जुड़े कानूनी और सामाजिक समाधान भी प्रस्तुत किए जाएंगे, ताकि भविष्य में स्थायी वैवाहिक संबंधों को प्रोत्साहित किया जा सके।

राजस्थान, जिसे उसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और परंपरागत मूल्यों के लिए जाना जाता है, में विवाह सदियों से केवल दो व्यक्तियों का ही नहीं, बल्कि परिवारों और समुदायों का भी मिलन माना जाता है। हिंदू विवाह पद्धति विशेष रूप से धार्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण मानी जाती है, जहाँ तलाक या विवाह विच्छेद का विचार सदियों तक अस्वीकार्य रहा है। विवाह के प्रति यह दृष्टिकोण आज भी समाज के एक बड़े हिस्से में प्रचलित है। किंतु समय के साथ, समाज में तेजी से आए परिवर्तन और आधुनिक जीवनशैली के प्रभाव के कारण विवाह विच्छेद की प्रवृत्ति राजस्थान में भी बढ़ने लगी है।

इस लेख का उद्देश्य राजस्थान के संदर्भ में हिंदू समाज में तलाक की बढ़ती प्रवृत्ति का विश्लेषण करना है। इसमें तलाक के प्रमुख कारणों, इसके सामाजिक और व्यक्तिगत प्रभावों, कानूनी पहलुओं तथा भविष्य के समाधान की चर्चा की गई है।

राजस्थान की सामाजिक संरचना और विवाह की परंपरा – राजस्थान की सामाजिक संरचना गहरी सांस्कृतिक और पारंपरिक जड़ों से बंधी हुई है। यहाँ विवाह एक सामाजिक कर्तव्य के रूप में देखा जाता है, जहाँ परिवारों और जातीय समूहों की प्रतिष्ठा का प्रश्न जुड़ा होता है। पारंपरिक रूप से हिंदू विवाह जीवनभर के बंधन के रूप में माना जाता था, जिसे धार्मिक रूप

से भी अनिवार्य समझा जाता है। समाज में महिलाओं की भूमिका पारिवारिक संरक्षक और गृहिणी की रही है, जबकि पुरुषों की भूमिका परिवार के भरण-पोषण तक सीमित मानी जाती थी।

हालांकि, आधुनिक समय में शिक्षा, शहरीकरण और आर्थिक स्वतंत्रता के प्रभाव ने इन पारंपरिक धारणाओं को चुनौती दी है। विशेष रूप से महिलाओं की आत्मनिर्भरता और समाज में बदलते पारिवारिक मूल्यों ने विवाह संबंधों को नए दृष्टिकोण से देखने का अवसर दिया है। इस पृष्ठभूमि में तलाक की घटनाओं में वृद्धि एक महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन का संकेत है।

तलाक के प्रमुख कारण- राजस्थान में विवाह विच्छेद की प्रवृत्ति में वृद्धि के कई प्रमुख कारण हैं, जो पारिवारिक, सामाजिक और व्यक्तिगत कारकों से प्रभावित हैं।

1. **महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता-** महिलाओं में शिक्षा और रोजगार के अवसरों की वृद्धि ने उन्हें आत्मनिर्भर बना दिया है। अब वे अपने अधिकारों के प्रति अधिक सजग हैं और असफल वैवाहिक संबंधों में बंधे रहने के लिए बाध्य नहीं हैं।
2. **शहरीकरण और बदलते सामाजिक मूल्य-** शहरी क्षेत्रों में परिवारों का स्वरूप संयुक्त परिवारों से एकल परिवारों में परिवर्तित हो रहा है। इस परिवर्तन ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता को बढ़ावा दिया है, जिससे तलाक की प्रवृत्ति में वृद्धि देखी जा रही है।
3. **संवादहीनता और असंगत अपेक्षाएँ-** वैवाहिक जीवन में सफल संबंध के लिए संवाद आवश्यक होता है, लेकिन आज के समय में भागदौड़ भरी जीवनशैली के कारण दंपति एक-दूसरे के साथ पर्याप्त समय नहीं बिता पाते। इससे आपसी तनाव और मतभेद बढ़ते हैं।
4. **सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक दबाव का घटता प्रभाव-** जहाँ पहले समाज का दबाव और सांस्कृतिक मूल्य विवाह को बचाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे, अब लोगों की व्यक्तिगत प्राथमिकताओं ने इन दबावों को कम कर दिया है।
5. **प्रेम विवाहों की बढ़ती प्रवृत्ति-** राजस्थान में भी प्रेम विवाहों का चलन बढ़ा है, लेकिन कई बार अपेक्षाएँ पूरी न होने पर यह विवाह असफल हो जाते हैं।

कानूनी प्रावधान और तलाक के प्रकार- भारत में तलाक से संबंधित कानून हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 (Hindu Marriage Act, 1955) के अंतर्गत आते हैं, जो तलाक के विभिन्न आधारों को मान्यता प्रदान करता है। इसमें क्रूरता, परित्याग, व्यभिचार, मानसिक विक्षिप्तता, संतानहीनता, और धर्मांतरण जैसे कारणों को शामिल किया गया है। राजस्थान में भी तलाक के मामले इन्हीं कानूनी प्रावधानों के अंतर्गत सुने जाते हैं।

तलाक के प्रकार:

1. **पारस्परिक सहमति से तलाक ((Mutual Consent Divorce)-** दोनों पक्षों की सहमति से तलाक का निर्णय लिया जाता है, जिसमें विवादों की संभावना कम होती है।
2. **एकतरफा तलाक (Contested Divorce)-** एक पक्ष द्वारा तलाक की अर्जी दी जाती है, जबकि दूसरा पक्ष इसका विरोध करता है। यह प्रक्रिया लंबी और जटिल हो सकती है।

तलाक के सामाजिक और व्यक्तिगत प्रभाव - तलाक केवल दो व्यक्तियों के बीच का कानूनी अलगाव नहीं है, बल्कि इसका गहरा सामाजिक और व्यक्तिगत प्रभाव पड़ता है।

1. **महिलाओं और बच्चों पर प्रभाव-** तलाक के बाद महिलाओं को सामाजिक कलंक का सामना करना पड़ता है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में। बच्चों पर भी इसका मनोवैज्ञानिक असर पड़ता है, जिससे उनकी शिक्षा और मानसिक विकास प्रभावित हो सकता है।
2. **सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन-** हालांकि शहरी क्षेत्रों में तलाक को अब सामान्य रूप से स्वीकार किया जाने लगा है, लेकिन ग्रामीण समाज में अभी भी तलाक को अस्वीकार्य माना जाता है। समाज का यह विभाजन तलाकशुदा व्यक्तियों के पुनर्विवाह में भी अवरोध उत्पन्न करता है।
3. **आर्थिक असुरक्षा-** तलाक के बाद विशेष रूप से महिलाओं को आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जब तक कि वे आत्मनिर्भर न हों।
4. **पारिवारिक संरचना पर प्रभाव-** तलाक से संयुक्त परिवारों का विघटन होता है और बच्चों की परवरिश पर इसका गहरा असर पड़ता है।

राजस्थान में तलाक की प्रवृत्तियों का विश्लेषण - राजस्थान में विवाह विच्छेद के मामलों में धीरे-धीरे वृद्धि देखी गई है। शहरी क्षेत्रों जैसे जयपुर, उदयपुर और जोधपुर में तलाक की घटनाएँ अधिक देखी जाती हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में अब भी पारंपरिक मूल्यों का प्रभाव मजबूत है। हालाँकि, शिक्षा और जागरूकता के प्रसार ने ग्रामीण महिलाओं को भी अपने अधिकारों के प्रति सजग किया है, जिससे तलाक के मामलों में वृद्धि हो रही है।

राज्य सरकार और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और तलाक के बाद के जीवन को सुचारू बनाने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं।

निष्कर्ष - राजस्थान में विवाह विच्छेद की उभरती प्रवृत्तियाँ समाज में हो रहे गहन परिवर्तनों का संकेत हैं। पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक जीवनशैली के बीच संतुलन स्थापित करना एक चुनौती बन गया है। तलाक के बढ़ते मामलों से यह स्पष्ट होता है कि वैवाहिक संबंधों में संवाद, समझ और आपसी सम्मान की आवश्यकता है।

हालाँकि तलाक को व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्म-सम्मान के रूप में देखा जा सकता है, लेकिन इसके सामाजिक और व्यक्तिगत प्रभावों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यह आवश्यक है कि समाज तलाकशुदा व्यक्तियों को समान अवसर प्रदान करे और उन्हें पुनर्विवाह तथा सामाजिक स्वीकार्यता का अवसर मिले।

प्रस्तावित समाधान और सुझाव

1. **परिवार परामर्श केंद्रों की स्थापना -** तलाक से पहले परिवारों को परामर्श देने के लिए सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा प्रयास किए जाने चाहिए।
2. **महिलाओं के लिए स्वरोजगार के अवसर-** तलाकशुदा महिलाओं के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करने हेतु स्वरोजगार और प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए।
3. **पुनर्विवाह के प्रति समाज का दृष्टिकोण बदलना-** समाज में पुनर्विवाह को प्रोत्साहित करना और तलाकशुदा व्यक्तियों को एक नया जीवन शुरू करने का अवसर देना आवश्यक है।
4. **कानूनी प्रक्रिया का सरलीकरण-** तलाक की कानूनी प्रक्रिया को सरल और समयबद्ध बनाना जरूरी है, ताकि विवादों को शीघ्र निपटाया जा सके।

राजस्थान में तलाक की बढ़ती प्रवृत्तियों का विश्लेषण समाज के

विकासशील स्वरूप का परिचायक है। इस विषय पर गहन शोध और समाधानमूलक उपायों के माध्यम से स्थायी वैवाहिक संबंधों को प्रोत्साहित करना आज के समय की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. अग्निहोत्री, ए. (2018). भारत में विवाह और पारिवारिक कानून: एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण, नई दिल्ली, प्रकाशन संस्थान।
2. चतुर्वेदी, बी. (2015). समकालीन समाज में विवाह विच्छेद की चुनौतियाँ, जयपुर, राजस्थान साहित्य अकादमी।
3. गुप्ता, आर. (2017). हिंदू विवाह और तलाक: सामाजिक और कानूनी विश्लेषण, मुंबई, लक्ष्मी पब्लिकेशन।
4. भारद्वाज, पी. (2019). राजस्थान का समाज और तलाक की प्रवृत्तियाँ, उदयपुर, मेवाड़ पब्लिकेशन।
5. शर्मा, के. (2016). भारत में वैवाहिक विवादों का कानूनी अध्ययन, दिल्ली, इंद्रप्रस्थ लॉ पब्लिकेशन।
6. मिश्रा, डी. (2020). पारिवारिक संरचना और तलाक: एक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण, पटना, प्रिया पब्लिकेशन।
7. तिवारी, एम. (2018). हिंदू समाज में विवाह और पारिवारिक जीवन. वाराणसीरू ज्ञान गंगा प्रकाशन।
8. सिंह, ए. (2021). भारत में तलाक का मनोवैज्ञानिक और कानूनी प्रभाव, दिल्ली: यूनीवर्सल लॉ पब्लिकेशन।
9. जोशी, वी. (2022). राजस्थान में पारिवारिक कानून और तलाक की प्रवृत्तियाँ, जोधपुर, मारवाड़ पब्लिशिंग हाउस।
10. देवी, एस. (2019). महिलाओं के अधिकार और तलाक: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, जयपुर, साहित्य भवन।

****